हंसता हुआ धर्म

एक फकीर हुआ नसरुद्दीन। वह एक नदी पार कर रहा था एक नाव में बैठकर। मल्लाह ने उससे...रास्ते में दोनों की कुछ बातचीत हुई। नसरुद्दीन बड़ा ज्ञानी आदमी समझा जाता था। ज्ञानियों को हमेशा यह कोशिश रहती है कि किसी को अज्ञानी सिद्ध करने का मौका मिल जाये तो वह छोड़ नहीं सकते हैं। तो उसमें मल्लाह अकेला था, मल्लाह से पूछा कि भाषा जानते हो? उस मल्लाह ने कहा, 'भाषा! बस जितना बोलता हूं, उतना ही जानता हूं। पढ़ना-लिखना मुझे कुछ पता नहीं है।'

नसरुद्दीन ने कहा, 'तेरा चार आना जीवन बेकार हो गया, क्योंकि जो पढ़ना नहीं जानता उसकी जिंदगी में क्या उसे ज्ञान मिल सकता है? बिन पढ़े, पागल! कहीं ज्ञान मिला है?' लेकिन मल्लाह चुपचाप हंसने लगा। मुझे बिलकुल नहीं आता है, ऐसे ही दो और दो चार जोड़ लेता हूं, यह दूसरी बात है।'

नसरुद्दीन ने कहा, 'तेरा चार आना जीवन और बेकार चला गया, क्योंकि जिसे गणित ही नहीं आता, जिसे जोड़ ही नहीं आता है वह जिंदगी में क्या जोड़ पायेगा। अरे, जोड़ना तो जानना चाहिए, तो कुछ जोड़ भी सकता था। तू जोड़ेगा क्या? तेरा आठ आना जीवन बेकार हो गया।' फिर जोर से तूफान और आंधी आयी और नाव उलटने के करीब हो गयी। उस मल्लाह ने पूछा, 'आपको तैरना आता है?' नसरुद्दीन ने कहा, 'मुझे तैरना नहीं आता।' उसने कहा, 'आपकी सोलह आना जिंदगी बेकार जाती है। मैं तो चला। न मुझे गणित आती है और न मुझे भाषा आती है, लेकिन मुझे तैरना आता है। तो, मैं तो जाता हूं और आपकी सोलह आना जिंदगी बेकार हुई जाती है।

मुल्ला नसरुद्दीन केमिस्ट की दुकान पर गये और दुकानदार से बोले : याद है, कल मैं आपके यहां से एक स्याही के दाग दूर करने वाली दवा ले गया था? दुकानदार ने कहा : हां, क्या नसरुद्दीन, दूसरी शीशी चाहिए, मुल्ला ने कहा कि नहीं, अब उस दवा के दाग मिटाने वाली दवा हो तो दीजिए।

मुल्ला नसरुद्दीन बड़ा ही आलसी किस्म का व्यक्ति है। उसका एक तकिया कलाम है—ऐसी जल्दी भी क्या है! वह बात-बात में यही दोहराता है कि ऐसी जल्दी भी क्या है! एक बार उसके मित्र चंदूलाल ने देखा कि नसरुद्दीन बड़ी तेजी से कार चलाता हुआ कहीं जा रहा है। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि मुल्ला को उसने कभी भी इतनी तेज कार चलाते देखा ही नहीं था। जब जल्दी ही नहीं तो कार क्या तेज चलानी! कार नसरुद्दीन ऐसे चलाता है जैसे कोई बैलगाड़ी चलाता है। शाम को उसने मुल्ला से पूछा कि क्या बात थी मुल्ला, आज तुम बड़ी ही तेज कार चला रहे थे, आखिर ऐसी क्या बात हो गई थी?

मुल्ला नसरुद्दीन बोला, बता देंगे भाई, ऐसी जल्दी भी क्या है!चंदूलाल ने दूसरे दिन फिर पूछा कि भई, अब तो बता दो कि क्या बात थी! कल तेज गाड़ी क्यों चला रहे थे? नसरुद्दीन का उत्तर वही था पूर्ववत, कि बता देंगे भाई, आखिर ऐसी जल्दी भी क्या है! जब पूछते-पूछते काफी दिन हो

तेज गाड़ी क्यों चला रहे थे? नसरुद्दीन का उत्तर वही था पूर्ववत, कि बता देंगे भाई, आखिर ऐसी जल्दी भी क्या है! जब पूछते-पूछते काफी दिन हो गए तो एक दिन नसरुद्दीन ने उसे सारा किस्सा बताया, जो इस प्रकार था। कहा, मैं उस दिन आराम से अपने ऑफिस जा रहा था—वही चाल, पुरानी बैलगाड़ी वाली—कि मैंने देखा कि सामने सड़क पर एक बुढ़िया सड़क पार करती हुई चली जा रही है। मैंने देखा कि वह सड़क के बीचों-बीच आ गई है। मैंने चाहा कि एकदम ब्रेक लगाऊं, लेकिन सोचा कि ऐसी जल्दी भी क्या है! और इतने में वह बुढ़िया कार के नीचे आ गई। फिर भी सोचा कि अब भी ब्रेक लगा लूं, लेकिन तुम तो जानते हो मेरा तकिया कलाम, सोचा ऐसी जल्दी भी क्या है! कि बुढ़िया को पार भी कर गया। तब तक भीड़ भी इकट्ठी होने लगी। सोचा कि अब तो कार रोक लूं, लेकिन वही पुराना तकिया कलाम कि ऐसी जल्दी भी क्या है! और इसी घबड़ाहट में ब्रेक पर पैर न लगा, एक्सीलेटर पर पैर लग गया। और अब एक्सीलेटर पर पैर लग गया तो कई दफा सोचा भी कि अरे भाई यह क्या कर रहा हूं! मगर वही पुराना तकिया कलाम कि ऐसी जल्दी भी क्या है! इसलिए उस दिन तेजी से चला रहा था, दफ्तर भी पीछे छूट गया।

मुल्ला नसरुद्दीन एक खेत में गया और वहां जाकर उसने अपना झोला खरबूजों से भर लिया। जब खेत से बाहर आ रहा था कि इतने में मालिक आ पहुंचा।

मुल्ला ने सफाई देते हुए कहा, मैं यहां से गुजर रहा था, तभी अचानक तेज हवाएं चलीं, और उन हवाओं ने मुझे उड़ाकर इस खेत में डाल दिया। मालिक ने पूछा, खरबूजों के बारे में क्या कहना है? हवा इतनी तेज थी श्रीमान कि मेरे हाथ जो भी चीज लगी मैंने उसे कसकर पकड़ लिया। और इसी कारण खरबूजे उखड़ गये हैं। लेकिन इन खरबूजों को तुम्हारे झोले में किसने डाल दिया है? मुल्ला ने कहा, सच-सच बता दूं। मैं खुद भी हैरान हूं कि आखिर ऐसे हुआ कैसे।

एक व्यक्ति नदी में कूदने जा रहा था कि मुल्ला नसरुद्दीन ने दौड़ कर उसकी कौलिया भर ली। वह व्यक्ति छूटने के लिए जोर मारने लगा